हर कृत्य में प्रेम २०१९

सिद्धयोग पथ पर, एक विद्यार्थी के लिए यह सर्वोपरि है कि वह साधना में प्रगति करने हेतु सिखावनियों का अध्ययन करे, उनका अभ्यास करे, उन्हें आत्मसात् करे और उनका परिपालन करे। जैसा कि आप जानते हैं, इस वर्ष सिद्धयोग पथ की वेबसाइट 'श्रीगुरुमाई के नववर्ष-सन्देश का अध्ययन व अन्वेषण' प्रकाशित कर रही है जो कि अध्ययन के साधनों का संग्रह है, जिसकी सहायता से लोगों को श्रीगुरुमाई के मधुर सरप्राइज़ २०१९ की सिखावनियों को समझने व उन्हें अभ्यास में उतारने में मदद मिल सके। इस परिप्रेक्ष्य में, आप देखेंगे कि श्रीगुरुमाई द्वारा 'हर कृत्य में प्रेम २०१९', यह एक पुस्तिका के रूप में संरचित है।

प्रत्येक वर्ष, गुरुमाई जी सन्त वेलेन्टाइन दिवस के सम्मान में 'हर कृत्य में प्रेम' की रचना करती हैं और हर वर्ष इसकी संरचना इस प्रकार से होती है जिससे आपको अपने अध्ययन और अन्वेषण को बढ़ाने में मदद मिल सके। कुछ लोगों के लिए, 'हर कृत्य में प्रेम २०१९' एक ख़ज़ाने की तरह होगा। अन्य लोगों के लिए, यह भूल-भुलैया की तरह होगा, एक पहेली की तरह होगा जिसे उन्हें हल करना है या फिर लुका-छिपी के खेल की तरह होगा। गुरुमाई जी ने कहा है, "*हर कृत्य में प्रेम* के पीछे आशय यह है कि लोग मज़ा लेने के साथ-साथ कुछ सीखें।"

यदि तुम किसी पल प्रेम को महसूस नहीं भी कर पा रहे हो,
तो भी जब तुम दूसरों को देखो तो प्रेम से देखो।
क्योंकि कहीं, किसी में,
तुम उस प्रेम से टकरा जाओगे जो तुम्हारे लिए नियत है।

~ गुरुमाई चिद्विलासानन्द

जब कुछ नहीं था तो खुदा था।
अगर कुछ नहीं होता, तो भी खुदा होता।
'होने' ने ही मुझे डुबो दिया।
अगर मैं न होता तो क्या होता?

~ मिर्ज़ा ग़ालिब

तुम किसी भी चीज़ से परेशान न हो,
तुम किसी भी चीज़ से भयभीत न हो।
सब कुछ बीत जाता है।
भगवान कभी नहीं बदलते।
धैर्ययुक्त सहनशीलता सब कुछ पा लेती है।
जिसके भी पास भगवान हैं, उसे किसी भी चीज़ की कमी नहीं होती।
एकमात्र भगवान ही काफ़ी हैं।

~ आविला की सन्त टेरेसा

माँगने पर प्रेम मिलना अच्छा है, पर बिना माँगे मिल जाने पर और भी अच्छा।

~ विलियम शेक्सपियर

समस्त वन तुम ही हो।
वन के समस्त दिव्य वृक्ष तुम हो।
वृक्षों तले खेलने वाले समस्त पशु-पक्षी तुम ही हो।
हर वस्तु के आधार, हे चेन्नमल्लिकार्जुन,
आप मुझे अपने मुखमण्डल के दर्शन कराएँ।

~ अक्कमहादेवी

परमात्मा के प्रति अपना प्रेम नित्यप्रति बढ़ने दो,
और वह प्रेम अहैतुक हो।

~ बाबा मुक्तानन्द

मेरी वाणी आपके नाम के अमृत से आकण्ठ भरी हुई है।
मेरी आँखों में आप ही की छवि बसी हुई है।
मेरे कान आपकी स्तुतियों के श्रवण से पूर्ण हैं।
मेरा मन आप ही के विचारों से पूर्ण है।
हे कूडलसंगमदेव, मैं आपके चरणकमलों में बसा एक भ्रमर हूँ।

~ बसवण्णा

प्रेम दूरियाँ नहीं जानता;
कुमुदिनी और चन्द्रमा
कितने दूर, फिर भी कितने समीप!
गगन द्वारा एक-साथ आलोकित

~ गुरुमाई चिद्विलासानन्द

सखिया, वा घर सबसे न्यारा, जहाँ पूरन पुरुष हमारा॥
जहाँ नहीं सुख-दुख, साच-झूट नहीं, पाप न पुन्य पसारा।
नहीं दिन-रैन, चाँद नहीं सूरज, बिन ज्योति उजियारा॥

~ सन्त कबीर

अपने अन्तर में बसे प्रेम को मुक्त कर दो, जो पूर्ण ही है, जो मुक्त ही है।
तब तुम अन्तरात्मा में ही अपना सुख पाओगे।

~ बाबा मुक्तानन्द

हे सर्वश्रेष्ठ, महामहिमावान परमेश्वर
मेरे मन के अन्धकार को प्रकाशमय कर दीजिए
और मुझे सच्ची श्रद्धा व सन्देहरहित आशा प्रदान कीजिए,
सर्वोत्तम दानशीलता व अगाध विनम्रता प्रदान कीजिए।

हे प्रभो! मुझे ऐसी समझ व ज्ञान दीजिए
कि मैं आपके पावन और सच्चे आदेश का पालन कर सकूँ।

~ असीसी के सन्त फ़्रान्सिस

जब मैं उस 'परम शुद्ध' से मिला तो मैं भी शुद्ध हो गया।
मेरा अहंकार मिट गया, मैं खुद खुदा हो गया।

~ धर्मदास

जो सच में प्रेम करता है . . . वह हर वस्तु में विद्यमान भगवान से प्रेम करता है और हर वस्तु में उसे पा लेता है।

~ माइस्टर एक्हार्ट

अगर तुममें सचमुच भगवान से मिलने की ललक है
तो अपना समस्त प्रेम उन्हीं पर केन्द्रित बनाए रखो।
प्रेम की अग्नि में अपने अहंकार को जला डालो
और इसका भस्म अपने तन पर लगाते रहो।

~ मन्सूर मस्ताना

यह कव्वाली "अगर है शौक़ मिलने का," सिद्धयोग बुकस्टोर में 'हृदय के बोल' नामक ऑडिओ सी.डी. में उपलब्ध है।

प्रेम एकमात्र ऐसी चीज़ है जो बाँटने से बढ़ती है।

~ क्लेमॅन्स ब्रेन्टानो

दान परमात्मा की इच्छा के अनुकूल है।
यह एक तेजस्वी प्रेम-कार्य है।

~ बाबा मुक्तानन्द

जिस लकड़ी से अग्नि का स्पर्श हो गया हो, उसका जल उठना कठिन नहीं।

~ अशान्ति क्षेत्र से एक कहावत

जब मेरा मन प्रभु राम के नामसंकीर्तन
के आह्लाद में डूबा हुआ था,
मेरे हृदय में आनन्द उमड़ पड़ा
और समस्त वातावरण उस आनन्द से स्पन्दित हो उठा।

~ गोविन्दराव टेम्बे

हम सदा प्रेम करें! हम पुनः प्रेम करें!
हम सदा प्रेम करें! हम पुनः प्रेम करें!
प्रेम के चले जाने पर,
आशा भी चली जाती है।
प्रेम — यह भोर की पुकार है।
प्रेम — यह रात्रि का स्तोत्र है।

~ विक्टर ह्यूगो

जब चाँद मुझे पूरी तरह से प्यार करता है, तो मैं तारों की राय की फ़िक्र करूँ ही क्यों?

~ मघरबी कहावत

जो तुम नहीं जानते, उस तक पहुँचने के लिए
तुम्हें वह रास्ता अपनाना होगा जिसे तुम नहीं जानते।
जो तुम्हारे पास नहीं है, वह पाने के लिए
तुम्हें वह रास्ता अपनाना होगा जहाँ कि तुम्हारे पास कुछ न हो।
जो तुम हो ही नहीं, ऐसी स्थिति तक पहुँचने के लिए
तुम्हें वह रास्ता अपनाना होगा
जहाँ तुम हो ही नहीं।

~ सेन्ट जॉन ऑफ़ द क्रॉस

लहर-पे-लहर सागर में नाचती है,
इसकी क्रीड़ा को देख हृदय उल्लास से भर जाता है।
उस पथ पर चलो जो तुम्हें बेफ़िक्र बना देता है,
संसार की थकान टिक नहीं सकती — उसे भागना ही है।

~ गुरुमाई चिद्विलासानन्द

आदर सच्ची शोभा और दिव्य सम्पदा है
क्योंकि यह मन को शुद्ध कर देता है।

~ बाबा मुक्तानन्द

मंज़िलें कहीं से भी दूर नहीं हैं, न ही ये पास हैं।
वह जिस पर भी चाहे इनायत [कृपा] कर दे;
यह फ़ैसला तो वह 'महबूब' ही करता है।
वह जिसे चाहे अपने दर पर बुला ले;
वह जिसे चाहे अपना बना ले।
ये फ़ैसले बड़ी मेहरबानी के हैं।
उसकी कृपा मिलना बड़े नसीब की बात है।

~ अज्ञात कवि द्वारा लिखित कव्वाली

सभी पवित्र तीर्थों का केन्द्र हृदय है।
वहाँ जाओ और वहीं रमण करो।

~ भगवान नित्यानन्द

जो धनवान हैं, वे शिवमन्दिर का निर्माण करते हैं।
पर मैं क्या करूँ? मैं तो निर्धन व्यक्ति हूँ।
मेरे पैर स्तम्भ हैं।
मेरा शरीर मन्दिर है,
और मेरा सिर स्वर्ण-गुम्बद है।
सुनिए, हे कूडलसंगमदेव,
जो अचल है, वह नष्ट हो जाता है,
चलायमान ही कभी नष्ट नहीं होता।

~ बसवण्णा

जो प्रेममय है, वह भगवद्मय ही है।

~ सन्त ऑगस्टीन

विवेक, अनुशासन, परोपकार व दयाभाव
से पोषित किया गया प्रेम बढ़ता है।

~ बाबा मुक्तानन्द

तू मुझे मिल भी गया है और तू मुझसे अलग भी है,
तेरा गुणगान कैसे करूँ?
तू मेरा प्रियतम भी है और मेरा भगवान भी है,
तेरा गुणगान कैसे करूँ?

~ अमीर खुसरो

प्रेम हरिस्वरूप है,
इसीलिए हरि प्रेमस्वरूप हैं।
सूरज और धूप की भाँति पृथक प्रतीत हो सकते हैं,
तथापि वे दोनों हैं एक ही।

~ रसखान

तुम मुझसे कितनी भी दूर क्यों न हो, मैं तुम्हारे साथ हूँ,
तुम मेरे निकट हो!
सूरज डूब रहा है, जल्दी ही मेरे लिए तारे चमकेंगे।
आह! काश तुम यहाँ होते!

~ योहान वुल्फ़गान्ग फ़ॉन गअर्ते

आपके चरणकमल मेरे हृदय में,
आपका रूप मेरे नयनों में,
और आपका नाम मेरी जिह्वा पर,
सदैव बना रहे।

~ सन्त सेना महाराज

जो सचमुच प्रेम करते हैं, उनके साथ यह चमत्कार हमेशा होता है।
वह सम्बल प्रदान करने वाला अनमोल प्रेम,
वे जितना देते हैं, उतना ही अधिक उनके पास होता है;
यह प्रेम फूलों और बच्चों को बल प्रदान करता है
और सभी लोगों की मदद कर सकता है
यदि वे उस प्रेम को बिना किसी सन्देह के स्वीकार कर लें।

~ रायना मारिया रिल्के

किसी भी दिन
या किसी भी रात
हृदय भटक सकता है।

याद करो समर्पण का
वह पहला पल।

प्रेम की भावना को फिर से नया करने के लिए
हर एक क़दम पर,
सौंवे क़दम पर,
और किसी चूके हुए क़दम पर,
उन वादों को फिर से ताज़ा करो
जो तुम्हारी यादों में
गुँथे हुए हैं।

~ गुरुमाई चिद्विलासानन्द

हे राजकुमारो, हे 'ईगल' और 'जॅगुअर' क़बीलों के शूरवीरो
तुम्हारे हृदय यह जान लें :
हम यहाँ हमेशा के लिए दोस्त नहीं हैं,
थोड़े ही समय के लिए हैं
और फिर हम सब 'उसके' घर चले जाएँगे।
ओहुआय्य ओहुआय्य।

~ एज़्टेक की कविता

नाहुआत भाषा के ये शब्द "ओहुआय्य ओहुआय्य" किसी गीत या संगीत में यह संकेत देते हैं कि वह गीत या पद अब समापन की ओर है। इन शब्दों का भाषान्तर नहीं किया जा सकता; बल्कि, ये शब्द गीत को लय और ताल प्रदान करते हैं।

श्रीगुरुमाई का आमन्त्रण

यह हृदय विभिन्न भाषाओं और लिपियों में प्रेम के लिए प्रयुक्त किए जाने वाले शब्दों से निर्मित है। श्रीगुरुमाई की इस हृदय की संकल्पना है कि यह आपके लिए एक आमन्त्रण हो ताकि आपकी काव्य प्रतिभा उजागर हो सके। 'हर कृत्य में प्रेम २०१९' का उत्सव मनाते हुए निस्संकोच होकर *स्वयं अपनी* कविता की रचना करें और उसे अपने जर्नल में लिखें।

योहान वुल्फ़्गान्ग फ़ॉन गअर्ते द्वारा लिखित कविता का भाषान्तर रिचर्ड स्टोक्स् द्वारा उनकी पुस्तक The Book of Lieder (London: Faber and Faber, 2005) से।

एज़्टेक की कविता, Ancient American Poets से, जॉन कर्ल द्वारा भाषान्तरित व संकलित (Tempe, AZ: Bilingual Review Press, 2005)।

© २०१९ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।